आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:12-12-14

हम बच्चों को ईश्वरीय श्रीमत् पर चलना सिखलाकर, हमें ज्ञान, गुणों और शक्तिओ के खजानों से भरपूर करने वाले, सर्व खजानों के सागर बाप ने कहा, मीठे बच्चे – बाप आये हैं तुम्हें सर्व खजानों से मालामाल बनाने, तुम सिर्फ ईश्वरीय मत पर चलो, अच्छी रीति पुरुषार्थ कर वर्सा लो, माया से हार नहीं खाओ.

सारे कल्प में अलग-अलग युग में हम आत्माये मुख्य तीन मतो पर चलते हैं - १. ईश्वरीय मत २. दैवी मत ३. मनुष्य मत. इसमें सबसे श्रेष्ठ है ईश्वरीय मत. जो हमें कल्प के अन्त में संगमयुग पर स्वयं परमात्मा से मिलती हैं. ईश्वरीय मत को अनुसरण कर हम आत्माये वापस अपने घर, परमधाम जाती है और फिर नई दुनिया में ऊंच पद पाते है. दैवी मत हमें स्वर्ग में (सतयुग-त्रेतायुग में) मिलती है जिसे हम स्वर्ग में सदा सुखी रहते हैं क्योंकि वह मत भी परमात्मा द्वारा इस समय संगम पर ही हमें मिलती हैं. फिर भी दैवी मत से भी हम आत्माये १६ कला सम्पूर्ण से १४ कला सम्पूर्ण यानी नीचे उतरते ही है. द्वापर से हमें मनुष्य मत मिलती है जो हमें दुखी बनाती है.

ईश्वरीय मत पर चलने के लिए ईश्वर में पूरा निश्चय होना जरूरी हैं. बाबा हमें रोज मुरलीओ के द्वारा अलग-अलग श्रीमत् देते ही रहते हैं. आज की मुरली से बाबा ने कही हुई श्रीमत् को निकालकर हम उसको ऐक्युरेंट धारण करने का पुरुषार्थ करेंगे.

स्वयं को आत्मा समझने के लिए कही गई श्रीमत् --

- आत्मा का स्वधर्म शांति है. जब हम ॐ शांति कहते है उसका अर्थ ही है - मैं आत्मा शांत स्वरूप हूँ. जब हम ॐ शांति कहते है तो आत्मा को अपना घर याद आता है. आत्मा को जब शरीर मिलता है तब टॉकी बनती है. शरीर छोटे से बड़ा होता है पर आत्मा की साइज (size) छोटी-बड़ी नहीं होती.

परमात्मा के परिचय पर कही गई श्रीमत् --

- परमपिता परमात्मा भी निराकार आत्मा के रुप में ही हैं. जब संगम पर उन्हें हम बच्चों को ज्ञान देना होता है तो यहाँ आकर टॉकी बनते है. बाबा हमारे जैसे गर्भ में नहीं आता है. बाबा डायरेक्ट इनमें - ब्रह्मा में प्रवेश करते हैं. ब्रह्मा ही उनके लिए रथ बनते है. इसलिए ब्रह्मा को माता भी कहते है और उन पर से ही ब्रह्मपुत्रा नदी का नाम भी पड़ा है. बाबा आकर हमें अपना और रचना के आदि-मध्य-अन्त का सारा ज्ञान देते है.

- परमात्मा स्वयं आकर तुम्हें कहते है कि मैं तुम्हारा बाप हूँ. जैसे हम मनुष्य बात करते है वैसे बाप भी बात करते है. बाबा का पार्ट सारे कल्प के अन्त में अब संगम पर ही आता है. जब हम आत्माये सम्पूर्ण पतित बन जाते है तब हमें वापस पावन बनाने आते है. बाप ही आकर हम मनुष्य को दैवी-देवता बनाते है. परमात्मा-बाप ही अभी स्वर्ग की स्थापना करते है और हमें उसका मालिक बनाते है.

सृष्टि चक्र के ज्ञान पर कही गई श्रीमत् --

- परमात्मा-बाप को ही ज्ञान का सागर कहा जाता है. वही कहते है मैं इस मनुष्य सृष्टि का चैतन्य बीज हूँ. बाबा ही सत है, चैतन्य बीजरुप है, उनमें ही सारे मनुष्य सृष्टि रुपी झाड़ की आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है.

- बाबा कहते है यह सृष्टि चक्र एक अनादि ड्रामा है, जो फिरता ही रहता है. यह ड्रामा ५ हजार वर्ष का है. बाबा ने हमें यह भी समझाया है कैसे यह ड्रामा फिरता है – पहले हम दैवी-देवता है फिर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनते है. बाबा ने हमें चक्र का सारा राज (razz) समझाया है.

- बाबा ने हमें समझाया है कि कैसे हम आत्माये शुरु में सतोप्रधान होती है फिर आहिस्ते-आहिस्ते सतो, रजो और तमो में आती है. वैसे ही आत्मा में पवित्रता कि डिग्री भी शुरु में १६ कला, फिर १४ कला, १२ कला ऐसे धीरे-धीरे कलियुग के अन्त में नो कला (जीरो कला) हो जाती है. बाबा कहते है अभी तुमने अनेक मनुष्य मत और एक ईश्वरीय मत को भी समझा है. कितना फर्क है कि एक ईश्वरीय मत ही हमें वापस श्रेष्ठ पावन मनुष्य बनाती है बाकी सब मते हमें पावन से पतित की तरफ ही ले जाती है. ॐ शांति.